International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN:2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 03(III), July-September, 2026, pp. 231-239

कोविड–19 महामारी का भारतीय उच्च शिक्षा पर प्रभावः फूकोवादी विश्लेषण

रेखा*

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: rekhamgenwa@gmail.com

Citation: रेखा (2026). कोविड–19 महामारी का भारतीय उच्च शिक्षा पर प्रभावः फूकोवादी विश्लेषण. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(03(III)), 231–239. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.3(III).9571

सार

प्रस्तुत अध्ययन दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत 63 विद्यार्थियों से एकत्रित आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन में माइकल फूको की अवधारणाओं के माध्यम से महामारीकालीन उच्च शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण किया गया है। महामारी के दौरान अधिकांश विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा के लिए स्मार्टफोन एवं मोबाइल इंटरनेट पर निर्भर थे तथा इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्याएँ मौजूद थीं। महामारी ने अधिगम गुणवत्ता, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक जीवन तथा शैक्षणिक समानता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। अध्ययन का निष्कर्ष है कि महामारी के दौरान उच्च शिक्षा संस्थान डिजिटल संरचनाओं में परिवर्तित हो गए, तथा डिजिटल तकनीक शिक्षण, निगरानी तथा नियंत्रण का प्रमुख माध्यम बन गई। साथ ही महामारी ने उच्च शिक्षा में पूर्व विद्यमान सामाजिक एवं आर्थिक असमानताओं को और अधिक स्पष्ट कर दिया।

शब्दकोशः *कोविड–19, उच्च शिक्षा, माइकल फूको, निगरानी, पैनॉप्टिसिज़्म, डिजिटल शासन, डिजिटल विभाजन, शैक्षणिक असमानता।*

प्रस्तावना

कोविड–19 महामारी से भारत में मार्च 2020 के बाद लागू लॉकडाउन के कारण सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को बंद कर दिया गया और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को डिजिटल माध्यम से संचालित करना पड़ा। ऑनलाइन शिक्षा ने जहाँ शैक्षणिक गतिविधियों की निरंतरता सुनिश्चित की, वहीं तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, डिजिटल कौशल, मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक असमानताओं को भी केंद्र में ला दिया।

माइकल फूको का दृष्टिकोण इनको समझने में उपयोगी है। महामारी के दौरान डिजिटल माध्यमों ने अनुशासन, निगरानी और आत्म–नियमन की प्रक्रियाओं को जन्म दिया। शिक्षा व्यवस्था तकनीकी रूप से अधिक नियंत्रित एवं डेटा–आधारित बनती दिखाई दी।

साहित्य समीक्षा एवं शोध–अंतराल

यूनेस्को के अनुसार महामारी में 1.5 अरब से अधिक शिक्षार्थी प्रभावित हुए और शिक्षा व्यवस्था को डिजिटल मंचों पर निर्भर होना पड़ा। डिजिटल संसाधनों और इंटरनेट तक असमान पहुँच के कारण बड़ी संख्या में विद्यार्थी शैक्षणिक गतिविधियों से पूर्ण रूप से जुड़ नहीं सके। शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करना महामारी के बाद भी एक प्रमुख चुनौती बनी।

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

यूनेस्को की 2023 रिपोर्ट ने यह स्पष्ट किया कि ऑनलाइन शिक्षा ने लाखों विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया से जोड़े रखा, लेकिन लगभग 50 करोड़ विद्यार्थी प्रभावी डिजिटल शिक्षा से वंचित रह गए। शिक्षा का अधिकार अब सार्थक डिजिटल कनेक्टिविटी के अधिकार से भी जुड़ गया है। तकनीक के बढ़ते उपयोग ने डेटा संग्रह, मूल्यांकन तथा डिजिटल निगरानी की नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न कीं।

मोक (2022), महामारी ने शिक्षण, अनुसंधान, अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा विश्वविद्यालय प्रशासन को गहराई से प्रभावित किया। डिजिटल शिक्षा ने संस्थागत प्रत्यास्थता को मजबूत किया, लेकिन पहुँच और समानता से जुड़े प्रश्नों को भी अधिक तीव्रता से सामने लाया।

धवन (2020) के अनुसार ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने में सहायता की, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता तथा डिजिटल दक्षता की कमी इसके प्रमुख अवरोध रहे।

मिश्रा, गुप्ता एवं श्री (2020), ऑनलाइन शिक्षा ने अस्थायी समाधान के रूप में कार्य किया। अधिगम गुणवत्ता, शिक्षकों की तैयारी तथा विद्यार्थियों की सहभागिता से संबंधित चुनौतियाँ बनी रहीं।

पोखरेल एवं क्षेत्री (2021), कोविड–19 ने वैश्विक स्तर पर शिक्षा के डिजिटलीकरण को बढ़ावा दिया। डिजिटल विभाजन भी समान रूप से बढ़ा, उन्होंने बताया कि डिजिटल उपकरणों तथा तकनीकी संसाधनों की असमान उपलब्धता ने शैक्षणिक अवसरों में असमानता उत्पन्न की। यह समस्या विशेष रूप से ग्रामीण एवं आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के बीच अधिक स्पष्ट रूप से देखी गई।

विलियमसन, आइनन एवं पॉटर (2020), महामारी के दौरान डिजिटल प्लेटफॉर्म डेटा–संचालित शासन और निगरानी के माध्यम भी बन गए। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों की उपस्थिति, सहभागिता, गतिविधियों और प्रदर्शन से संबंधित विस्तृत सूचनाएँ संग्रहित करते हैं, जिससे शिक्षा व्यवस्था निगरानी पर अधिक आधारित होती चली गई। महामारी के दौरान उच्च शिक्षा संस्थानों में डेटा–आधारित निगरानी और डिजिटल नियंत्रण की प्रक्रियाएँ तेज हुईं, जिससे गोपनीयता, स्वायत्तता और शक्ति संबंधों पर नए प्रश्न उभरे।

माइकल फूको (1977), पैनॉप्टिसिज़्म की अवधारणा इस बात पर बल देती है कि निरंतर निगरानी की संभावना व्यक्तियों में आत्म–अनुशासन विकसित करती है। फूको (1980), ज्ञान का नियंत्रण सामाजिक शक्ति का महत्त्वपूर्ण स्रोत होता है। वहीं फूको (1991) की गवर्नमेंटैलिटी अवधारणा, आधुनिक संस्थाएँ व्यक्तियों को स्वयं अपनी गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए प्रेरित करती हैं। ऑनलाइन शिक्षा में विद्यार्थियों के आत्म–अध्ययन, समय प्रबंधन, डिजिटल सहभागिता और निरंतर मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ इन अवधारणाओं को प्रासंगिक बनाती हैं।

बॉल (2013), समकालीन शिक्षा व्यवस्था प्रदर्शन मापन, जवाबदेही तथा डेटा–आधारित निगरानी पर अधिक निर्भर होती जा रही है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के व्यापक उपयोग ने इस प्रवृत्ति को और अधिक सुदृढ़ किया।

अधिकांश अध्ययन डिजिटल शिक्षा को तकनीकी या नीतिगत दृष्टिकोण से देखते हैं, जबकि डिजिटल शासन, डेटा–आधारित निगरानी और आत्म–नियमन की प्रक्रियाओं पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है। दिल्ली–एनसीआर जैसे प्रमुख उच्च शिक्षा केंद्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों और शोधार्थियों के अनुभवों का फूकोवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण करने वाले अध्ययन अनुपस्थित हैं। तकनीकी पहुँच, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक जीवन, आर्थिक प्रभाव और अनुसंधान गतिविधियों को एकीकृत रूप में समझने वाले अध्ययन भी सीमित हैं।

इसी शोध–अंतराल को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन कोविड–19 महामारी के दौरान उच्च शिक्षा में आए परिवर्तनों का विश्लेषण विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों के आधार पर करता है तथा माइकल फूको की शक्ति/ज्ञान, अनुशासन, पैनॉप्टिसिज़्म, गवर्नमेंटैलिटी और बायोपावर की अवधारणाओं का उपयोग करके डिजिटल शिक्षा, निगरानी और शैक्षणिक असमानता के संबंधों को समझने का प्रयास करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

शोध–अंतराल के आधार पर अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं।

- महामारी का उच्च शिक्षा पर प्रभाव ज्ञात करना।
- विद्यार्थियों के ऑनलाइन शिक्षा संबंधी अनुभवों का विश्लेषण करना।
- शैक्षणिक असमानता के संबंधों का अध्ययन करना।
- माइकल फूको की शक्ति, अनुशासन एवं निगरानी संबंधी अवधारणाओं के माध्यम से महामारीकालीन शिक्षा व्यवस्था की व्याख्या करना।
- मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक जीवन एवं आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करना।
- भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के प्रति विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है। प्राथमिक आँकड़े दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से संकलित किए गए। अध्ययन का कुल निदर्श 63 उत्तरदाताओं, जिसमें स्नातक, स्नातकोत्तर तथा शोधार्थी तीनों स्तरों के विद्यार्थी सम्मिलित हैं।

सैद्धान्तिक रूपरेखा

प्रस्तुत अध्ययन माइकल फूको के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण पर आधारित है। विशेष रूप से शक्ति/ज्ञान, अनुशासन, पैनॉप्टिसिज़्म, गवर्नमेंटैलिटी और बायोपावर की अवधारणाओं का उपयोग किया गया है। महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल प्लेटफॉर्म, वर्चुअल निगरानी तथा स्वास्थ्य–संबंधी संस्थागत नियंत्रण को समझने में ये अवधारणाएँ विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होती हैं।

- **शक्ति/ज्ञान**

माइकल फूको के अनुसार शक्ति और ज्ञान एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। उनके विचार में ज्ञान केवल सूचना या बौद्धिक संसाधन नहीं है, बल्कि यह शक्ति के संचालन का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम भी है। जो संस्थाएँ ज्ञान का उत्पादन, वितरण और वैधीकरण करती हैं, वे व्यक्तियों के व्यवहार तथा सामाजिक संरचनाओं को भी प्रभावित करती हैं। विश्वविद्यालय, विद्यालय, शोध संस्थान तथा अन्य शैक्षणिक संगठन ऐसे प्रमुख संस्थान हैं जो ज्ञान के माध्यम से शक्ति का प्रयोग करते हैं।

फूको के दृष्टिकोण से देखा जाए तो महामारी ने यह स्पष्ट कर दिया कि ज्ञान का वितरण समान रूप से नहीं होता। डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता के कारण कुछ विद्यार्थी शिक्षा प्रणाली में अधिक सशक्त स्थिति में रहे, जबकि अन्य अपेक्षाकृत हाशिए पर चले गए। इसलिए कोविड–19 के दौरान डिजिटल पहुँच केवल तकनीकी सुविधा का विषय नहीं रही, बल्कि यह शक्ति और अवसरों के वितरण का भी विषय बन गई।

- **अनुशासन**

फूको के अनुसार आधुनिक संस्थाएँ व्यक्तियों को नियंत्रित करने के लिए प्रत्यक्ष दंड के बजाय अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं का उपयोग करती हैं। अनुशासन का उद्देश्य व्यक्तियों के व्यवहार को इस प्रकार व्यवस्थित करना होता है कि वे संस्थागत मानकों और अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करें। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में उपस्थिति, समय–सारिणी, परीक्षा, मूल्यांकन तथा प्रदर्शन मापन जैसी प्रक्रियाएँ अनुशासन के उदाहरण हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों को नियमित रूप से ऑनलाइन कक्षाओं में उपस्थित रहना, समय पर असाइनमेंट जमा करना तथा विभिन्न प्रकार की डिजिटल शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेना आवश्यक

था। इस प्रकार ऑनलाइन शिक्षा ने अनुशासन को अधिक तकनीकी और डेटा–आधारित स्वरूप प्रदान किया। फूको की अनुशासन संबंधी अवधारणा महामारीकालीन उच्च शिक्षा व्यवस्था को समझने में इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बताती है कि संस्थाएँ किस प्रकार व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित और संगठित करती हैं।

- **पैनॉप्टिसिज़्म**

फूको की सबसे चर्चित अवधारणाओं में से एक पैनॉप्टिसिज़्म है। यह विचार जेरेमी बेंथम के पैनॉप्टिकॉन मॉडल से प्रेरित है। पैनॉप्टिकॉन ऐसी संरचना है जिसमें व्यक्ति यह सुनिश्चित नहीं कर सकता कि उसे देखा जा रहा है या नहीं, लेकिन निगरानी की संभावना भर उसके व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त होती है।

अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि विद्यार्थियों को यह ज्ञात था कि उनकी उपस्थिति, असाइनमेंट, शैक्षणिक सहभागिता और परीक्षा प्रदर्शन को डिजिटल रूप से दर्ज किया जा रहा है। परिणामस्वरूप उन्होंने स्वयं अपने व्यवहार को संस्थागत अपेक्षाओं के अनुरूप नियंत्रित किया। ऑनलाइन शिक्षा को एक प्रकार के ''डिजिटल पैनॉप्टिकॉन'' के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ तकनीकी प्लेटफॉर्म निगरानी और आत्म–अनुशासन दोनों को प्रोत्साहित करते हैं।

- **गवर्नमेंटैलिटी**

इसके अनुसार शासन केवल प्रत्यक्ष नियंत्रण या कानूनी आदेशों के माध्यम से नहीं चलता, बल्कि व्यक्तियों को स्वयं अपने व्यवहार का नियमन करने के लिए प्रेरित करके भी संचालित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, आधुनिक संस्थाएँ व्यक्तियों को इस प्रकार प्रशिक्षित करती हैं कि वे बिना बाहरी दबाव के स्वयं संस्थागत मानकों का पालन करें।

विश्वविद्यालयों ने विद्यार्थियों को निर्देश तो दिए, परंतु दैनिक शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जिम्मेदारी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई। इस प्रकार महामारी के दौरान शिक्षा व्यवस्था में शासन का स्वरूप प्रत्यक्ष नियंत्रण से हटकर आत्म–नियमन की दिशा में विकसित होता दिखाई देता है।

- **बायोपावर**

आधुनिक समाज में सरकारें और संस्थाएँ केवल व्यक्तियों के व्यवहार को ही नियंत्रित नहीं करतीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य, सुरक्षा और जीवन की रक्षा से जुड़ी प्रक्रियाओं का भी संचालन करती हैं। बायोपावर का उद्देश्य जनसंख्या के स्वास्थ्य और उत्पादकता को बनाए रखना होता है।

अध्ययन में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने तनाव, चिंता, सामाजिक अलगाव, आँखों में तनाव तथा अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का उल्लेख किया। इससे स्पष्ट होता है कि महामारी केवल शैक्षणिक संकट नहीं थी, बल्कि यह एक व्यापक स्वास्थ्य और सामाजिक संकट भी थी। बायोपावर की अवधारणा के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि महामारी के दौरान उच्च शिक्षा संस्थान शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ स्वास्थ्य और जीवन की सुरक्षा से संबंधित व्यवस्थाओं के भी महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गए।

कोविड–19 महामारी के दौरान उच्च शिक्षा व्यवस्था में आए परिवर्तन केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं थे। शक्ति/ज्ञान, अनुशासन, पैनॉप्टिसिज़्म, गवर्नमेंटैलिटी तथा बायोपावर की अवधारणाएँ यह समझने में सहायता करती हैं कि डिजिटल शिक्षा ने शक्ति संबंधों, निगरानी प्रक्रियाओं, आत्म–अनुशासन तथा संस्थागत नियंत्रण के नए रूपों को किस प्रकार विकसित किया। यही सैद्धान्तिक ढाँचा प्रस्तुत अध्ययन के अनुभवजन्य निष्कर्षों की व्याख्या का आधार प्रदान करता है।

परिणाम एवं विश्लेषण

अध्ययन के अंतर्गत दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत 63 विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। परिणामों को उत्तरदाताओं की

सामाजिक–जनसांख्यिकीय विशेषताओं, डिजिटल पहुँच, शिक्षण–अधिगम अनुभवों, मानसिक स्वास्थ्य, आर्थिक प्रभावों तथा भविष्य की शैक्षणिक प्राथमिकताओं के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

- **उत्तरदाताओं की सामाजिक–जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल**

प्रस्तुत अध्ययन में महिला एवं पुरुष दोनों समूहों का लगभग समान प्रतिनिधित्व रहा।अध्ययन में पुरुष तथा महिला उत्तरदाताओं का संतुलित प्रतिनिधित्व रहा। यह वितरण महामारी के प्रभावों को लैंगिक दृष्टिकोण से समझने में सहायक है। महामारी के दौरान घरेलू उत्तरदायित्वों, अध्ययन समय तथा मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में महिला और पुरुष विद्यार्थियों के अनुभवों में भिन्नताएँ देखने को मिलीं।

सर्वाधिक उत्तरदाता स्नातक स्तर के थे, जिनका प्रतिशत 55.6 था। स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का प्रतिशत 27.0 तथा शोधार्थियों का प्रतिशत 17.5 था। यह वितरण अध्ययन को बहुस्तरीय दृष्टिकोण प्रदान करता है। स्नातक विद्यार्थियों के अनुभव मुख्यतः ऑनलाइन शिक्षा और परीक्षा प्रणाली से जुड़े थे, जबकि शोधार्थियों ने फील्डवर्क, डेटा संग्रहण एवं पुस्तकालय उपयोग से संबंधित चुनौतियाँ अधिक अनुभव कीं।

- **डिजिटल पहुँच एवं शैक्षणिक असमानता**

महामारी के दौरान उच्च शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह डिजिटल माध्यमों पर निर्भर हो गई। इसलिए विद्यार्थियों की डिजिटल पहुँच, इंटरनेट सुविधा तथा तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता उनके शैक्षणिक अनुभवों को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारक बन गए।

अधिकांश विद्यार्थी (69.8 प्रतिशत) ऑनलाइन शिक्षा के लिए स्मार्टफोन पर निर्भर थे। केवल 30.2 प्रतिशत विद्यार्थियों के पास लैपटॉप या डेस्कटॉप उपलब्ध था। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा का प्रमुख आधार स्मार्टफोन बने रहे।

फूको की शक्ति/ज्ञान अवधारणा के संदर्भ में देखा जाए तो तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता ज्ञान तक पहुँच का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बन गई। जिन विद्यार्थियों के पास बेहतर डिजिटल उपकरण उपलब्ध थे, वे शैक्षणिक गतिविधियों में अधिक प्रभावी रूप से भाग ले सके।

57.1 प्रतिशत विद्यार्थी मोबाइल डेटा पर निर्भर थे। केवल 30.2 प्रतिशत विद्यार्थियों को ब्रॉडबैंड या वाई–फाई सुविधा उपलब्ध थी। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि अधिकांश विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा सीमित इंटरनेट संसाधनों पर आधारित थी।

यह स्थिति डिजिटल विभाजन के उस आयाम को दर्शाती है जिसमें केवल उपकरणों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं होती, बल्कि इंटरनेट की गुणवत्ता और स्थिरता भी महत्त्वपूर्ण होती है।

केवल 1.5 प्रतिशत विद्यार्थियों को कभी इंटरनेट समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। इसके विपरीत 55.6 प्रतिशत विद्यार्थियों (हमेशा + अक्सर) ने गंभीर नेटवर्क समस्याओं की सूचना दी।

यह परिणाम स्पष्ट करता है कि तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता मात्र पर्याप्त नहीं थी, बल्कि उनकी गुणवत्ता और विश्वसनीयता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण थी। अध्ययन की परिकल्पना के अनुसार इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्याओं का ऑनलाइन शिक्षा के अनुभवों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जिसे उपलब्ध आँकड़े समर्थन प्रदान करते हैं।

- **ऑनलाइन शिक्षा की गुणवत्ता और अधिगम अनुभव**

60.3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षा की गुणवत्ता को ''खराब'' अथवा ''बहुत खराब'' माना। केवल 19.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इसे बेहतर बताया।

यह निष्कर्ष संकेत करता है कि ऑनलाइन शिक्षा सूचना संप्रेषण का माध्यम तो बनी, लेकिन प्रत्यक्ष संवाद, तत्काल शंका समाधान और सहभागितापूर्ण अधिगम जैसी विशेषताएँ कमजोर हो गईं। अध्ययन की परिकल्पना कि ऑनलाइन शिक्षा ने अधिगम गुणवत्ता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया, इस विश्लेषण से समर्थित होती है।

- **व्यावहारिक शिक्षण एवं प्रयोगशाला अनुभव**

61.9 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि महामारी के दौरान उन्हें केवल सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त हुआ। यह विशेष रूप से विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण चुनौती थी।

इस निष्कर्ष से अध्ययन की परिकल्पना समर्थित होती है कि व्यावहारिक एवं प्रयोगशाला आधारित विषयों के विद्यार्थी महामारी से अधिक प्रभावित हुए।

- **मानसिक स्वास्थ्य एवं बायोपावर**

सारणी 1: ऑनलाइन शिक्षा के दौरान अनुभव की गई स्वास्थ्य समस्याएँ

स्वास्थ्य समस्या	आवृत्ति	प्रतिशत
आँखों में तनाव/जलन	46	73.0
पीठ दर्द	37	58.7
सिरदर्द	23	36.5
नींद संबंधी समस्या	20	31.7
कोई समस्या नहीं	5	7.9

उपरोक्त सारणी 1 से स्पष्ट है कि 73 प्रतिशत विद्यार्थियों ने आँखों में तनाव का अनुभव किया, जबकि 58.7 प्रतिशत विद्यार्थियों ने पीठ दर्द की शिकायत की। यह निष्कर्ष ऑनलाइन शिक्षा के शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष प्रभाव को दर्शाता है।

इसके साथ ही उत्तरदाताओं ने भविष्य को लेकर चिंता, सामाजिक अलगाव एवं मानसिक तनाव की भी सूचना दी। फूको की **बायोपावर** अवधारणा के अनुसार आधुनिक संस्थाएँ केवल ज्ञान का प्रबंधन नहीं करतीं, बल्कि स्वास्थ्य और जीवन से संबंधित व्यवस्थाओं का भी संचालन करती हैं। महामारी के दौरान विश्वविद्यालयों की भूमिका इसी संदर्भ में महत्त्वपूर्ण हो गई।

- **भविष्य की शिक्षा प्रणाली के प्रति विद्यार्थियों की वरीयता**

60 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाइब्रिड शिक्षण मॉडल को भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के लिए सबसे उपयुक्त विकल्प माना। केवल 12.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने पूर्णतः ऑनलाइन शिक्षा को प्राथमिकता दी।

यह परिणाम संकेत करता है कि विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा की उपयोगिता को स्वीकार करते हैं, परंतु वे इसे प्रत्यक्ष शिक्षण का पूर्ण विकल्प नहीं मानते। अध्ययन की परिकल्पना कि अधिकांश विद्यार्थी हाइब्रिड शिक्षण मॉडल को प्राथमिकता देते हैं, इस निष्कर्ष से समर्थित होती है।

अध्ययन के अनुभवजन्य निष्कर्ष निम्न प्रमुख बिंदुओं को रेखांकित करते हैं –

- अधिकांश विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा के लिए स्मार्टफोन और मोबाइल डेटा पर निर्भर थे।
- इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्याएँ व्यापक रूप से मौजूद थीं।
- ऑनलाइन शिक्षा की गुणवत्ता को अधिकांश विद्यार्थियों ने असंतोषजनक माना।
- व्यावहारिक एवं प्रयोगशाला आधारित शिक्षण सबसे अधिक प्रभावित हुआ।
- विद्यार्थियों ने मानसिक तनाव, चिंता और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का अनुभव किया।
- डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता ने शैक्षणिक असमानताओं को बढ़ाया।
- अधिकांश उत्तरदाता भविष्य के लिए हाइब्रिड शिक्षण मॉडल को प्राथमिकता देते हैं।

चर्चा

कोविड–19 महामारी ने भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था को केवल तकनीकी, सामाजिक, आर्थिक और वैचारिक स्तर पर प्रभावित किया। महामारी के दौरान उच्च शिक्षा संस्थानों को शिक्षण–अधिगम की निरंतरता बनाए रखने के लिए डिजिटल तकनीकों पर निर्भर होना पड़ा। शिक्षा का स्वरूप, संचालन और नियंत्रण अधिक तकनीक–आधारित हो गया। अधिकांश विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा के लिए स्मार्टफोन तथा मोबाइल इंटरनेट पर निर्भर थे। शिक्षा तक पहुँच अब केवल विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्त कर लेने से सुनिश्चित नहीं होती, बल्कि तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हो गई है।

जिन विद्यार्थियों के पास बेहतर इंटरनेट सुविधा, लैपटॉप अथवा डेस्कटॉप उपलब्ध थे, वे ऑनलाइन शिक्षा में अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी रूप से भाग ले सके। इसके विपरीत सीमित संसाधनों वाले विद्यार्थियों को नियमित कक्षाओं में शामिल होने, अध्ययन सामग्री प्राप्त करने तथा ऑनलाइन परीक्षाओं में भाग लेने में कठिनाई हुई। यह डिजिटल विभाजन की अवधारणा को पुष्ट करता है, महामारी ने शिक्षा में पहले से मौजूद असमानताओं को और अधिक स्पष्ट कर दिया। फूको की शक्ति/ज्ञान अवधारणा के अनुसार ज्ञान तक पहुँच स्वयं शक्ति का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है, इस दृष्टि से देखा जाए तो डिजिटल संसाधनों का असमान वितरण शैक्षणिक अवसरों के असमान वितरण में परिवर्तित हो गया।

महामारी के दौरान शिक्षा संस्थानों में डिजिटल निगरानी की प्रक्रियाएँ अधिक व्यापक हो गईं। महामारी के दौरान विद्यार्थियों को यह ज्ञात था कि उनकी उपस्थिति, सहभागिता और प्रदर्शन पर लगातार नज़र रखी जा रही है। परिणामस्वरूप उन्होंने स्वयं अपने व्यवहार को नियंत्रित किया। इस प्रकार ऑनलाइन कक्षाओं को आधुनिक ''डिजिटल पैनॉप्टिकॉन'' के रूप में समझा जा सकता है।

फूको की अनुशासन संबंधी अवधारणा भी अध्ययन के निष्कर्षों को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विद्यार्थियों को निर्धारित समय पर कक्षाओं में उपस्थित होना, असाइनमेंट जमा करना तथा ऑनलाइन मूल्यांकन प्रक्रियाओं का पालन करना पड़ा। इस प्रकार अनुशासनात्मक शक्ति समाप्त नहीं हुई, बल्कि उसका स्वरूप परिवर्तित हो गया।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि महामारी ने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला। बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने आँखों में तनाव, पीठ दर्द, नींद संबंधी समस्याओं, चिंता और मानसिक दबाव का अनुभव किया। सामाजिक अलगाव, भविष्य को लेकर अनिश्चितता तथा रोजगार संबंधी चिंताओं ने मानसिक तनाव को और अधिक बढ़ाया। इस स्थिति को फूको की बायोपावर अवधारणा के माध्यम से समझा जा सकता है।

सामाजिक जीवन और सामाजिक पूंजी पर महामारी का प्रभाव भी अध्ययन में स्पष्ट रूप से सामने आया। विश्वविद्यालय केवल शैक्षणिक संस्थान नहीं होते, बल्कि सामाजिक संपर्क, सांस्कृतिक सहभागिता और बौद्धिक संवाद के महत्त्वपूर्ण केंद्र भी होते हैं। परिसरों के बंद होने से सहपाठी अधिगम, छात्र राजनीति, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और समूह–अध्ययन जैसी प्रक्रियाएँ प्रभावित हुईं। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की सामाजिक पूंजी का स्तर कमजोर हुआ और सामाजिक अलगाव की भावना में वृद्धि हुई।

आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि महामारी का प्रभाव सभी विद्यार्थियों पर समान रूप से नहीं पड़ा। इंटरनेट डेटा, डिजिटल उपकरणों और तकनीकी संसाधनों पर अतिरिक्त व्यय ने विद्यार्थियों पर आर्थिक दबाव बढ़ाया। जिन परिवारों की आय महामारी से प्रभावित हुई, उनके विद्यार्थियों को शिक्षा जारी रखने में अपेक्षाकृत अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। यह निष्कर्ष संघर्षवादी दृष्टिकोण तथा सामाजिक असमानता के सिद्धान्तों की पुष्टि करता है।

शोधार्थियों के अनुभवों से यह भी स्पष्ट हुआ कि कोविड–19 महामारी का प्रभाव ज्ञान उत्पादन की प्रक्रिया पर भी पड़ा। फील्डवर्क, डेटा संग्रहण, पुस्तकालय उपयोग और पर्यवेक्षकों से संवाद जैसी प्रक्रियाएँ बाधित

हुईं। कई शोधार्थियों को अपने शोध कार्य में देरी का सामना करना पड़ा। इस प्रकार महामारी ने न केवल शिक्षण–अधिगम को प्रभावित किया, बल्कि अनुसंधान और ज्ञान निर्माण की संरचना को भी प्रभावित किया।

अध्ययन का एक सकारात्मक निष्कर्ष यह है कि अधिकांश विद्यार्थियों ने भविष्य के लिए हाइब्रिड शिक्षण मॉडल को प्राथमिकता दी। यह परिणाम दर्शाता है कि विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा के लाभों को स्वीकार करते हैं, लेकिन प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण की उपयोगिता को भी महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसलिए भविष्य की उच्च शिक्षा व्यवस्था डिजिटल और प्रत्यक्ष शिक्षण के संतुलित समन्वय की दिशा में विकसित हो सकती है।

निष्कर्ष

फूको की शक्ति/ज्ञान, अनुशासन, पैनॉप्टिसिज़्म, गवर्नमेंटैलिटी और बायोपावर की अवधारणाएँ महामारीकालीन उच्च शिक्षा व्यवस्था को समझने के लिए एक प्रभावी सैद्धान्तिक आधार प्रदान करती हैं। महामारी के दौरान उच्च शिक्षा संस्थान डिजिटल रूप से नियंत्रित संरचनाओं में परिवर्तित हो गए, जहाँ तकनीकी माध्यमों ने शिक्षण, निगरानी और मूल्यांकन के साथ–साथ शक्ति संचालन का भी कार्य किया। ऑनलाइन शिक्षा ने विद्यार्थियों में आत्म–अनुशासन और आत्म–नियमन की प्रक्रियाओं को मजबूत किया तथा नियंत्रण के नए रूप विकसित किए।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि महामारी ने उच्च शिक्षा में विद्यमान सामाजिक एवं आर्थिक असमानताओं को और अधिक स्पष्ट कर दिया। संपन्न तथा वंचित विद्यार्थियों के अनुभवों में महत्त्वपूर्ण अंतर देखने को मिला। इसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक जीवन और अनुसंधान गतिविधियों पर भी महामारी का व्यापक प्रभाव पड़ा।

कोविड–19 महामारी भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था के लिए एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तनकारी घटना सिद्ध हुई। इसने एक ओर डिजिटल शिक्षा की संभावनाओं को बढ़ावा दिया, वहीं दूसरी ओर शिक्षा में विद्यमान संरचनात्मक चुनौतियों को भी उजागर किया। इसलिए भविष्य की उच्च शिक्षा नीतियों में डिजिटल अवसंरचना के विस्तार, समान अवसरों की उपलब्धता, मानसिक स्वास्थ्य सहायता, समावेशी तकनीकी प्लेटफॉर्म तथा छात्र–केंद्रित नीतियों को प्राथमिकता दिए जाने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों द्वारा हाइब्रिड शिक्षण मॉडल को दी गई प्राथमिकता यह संकेत करती है कि भविष्य की शिक्षा व्यवस्था डिजिटल और प्रत्यक्ष शिक्षण के संतुलित समन्वय पर आधारित हो सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बॉल, एस. जे. (2013), फूको, शक्ति और शिक्षा, रूटलेज।
2. धवन, एस. (2020), कोविड–19 संकट के दौरान ऑनलाइन शिक्षा : एक प्रभावी विकल्प। जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी सिस्टम्स, 49(1), 5–22।
3. फूको, एम. (1977), अनुशासन और दंड : कारागार का जन्म, पैंथियन बुक्स।
4. फूको, एम. (1980), शक्ति/ज्ञान : चयनित साक्षात्कार और अन्य लेखन, 1972–1977, 1972–1977), पैंथियन बुक्स।
5. फूको, एम. (1991), गवर्नमेंटैलिटी, जी. बर्चेल, सी. गॉर्डन एवं पी. मिलर (संपा.), द फूको इफेक्ट : स्टडीज़ इन गवर्नमेंटैलिटी (पृ. 87–104) में, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।
6. फूको, एम. (2003), समाज की रक्षा की जानी चाहिए, पिकाडोर।
7. फूको, एम. (2008), बायोपॉलिटिक्स का जन्म, पालग्रेव मैकमिलन।
8. मिश्रा, एल., गुप्ता, टी., एवं श्री, ए. (2020), कोविड–19 महामारी के लॉकडाउन काल में उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च ओपन, 1, 100012।
9. मोक, के. एच. (2022), उच्च शिक्षा पर कोविड–19 का प्रभाव, यूनेस्को विश्व उच्च शिक्षा सम्मेलन हेतु तैयार पृष्ठभूमि शोध–पत्र।

10. पोखरेल, एस., एवं क्षेत्री, आर. (2021). कोविड–19 महामारी का शिक्षण एवं अधिगम पर प्रभाव : एक साहित्य समीक्षा। हायर एजुकेशन फॉर द फ्यूचर, 8(1), 133–141।

11. उन्नी, एस. (2023), भारत में कोविड–19 और डिजिटल विभाजन। एस. उन्नी एवं अन्य (संपा.), भारत में उच्च शिक्षा का भविष्य और कोविड–19 में। स्प्रिंगर।

12. यूनेस्को. (2020), कोविड–19 और उच्च शिक्षा : आज और कल – प्रभाव विश्लेषण, नीतिगत प्रतिक्रियाएँ एवं अनुशंसाएँ। यूनेस्को–आईईएसएएलसी।

13. यूनेस्को. (2021), शिक्षाः व्यवधान से पुनर्प्राप्ति तक। यूनेस्को।

14. यूनेस्को. (2023), वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट 2023 : शिक्षा में प्रौद्योगिकी – किसकी शर्तों पर एक उपकरण? यूनेस्को।

15. विलियमसन, बी., आइनन, आर., एवं पॉटर, जे. (2020). महामारी, शिक्षाशास्त्र और व्यवहार : कोविड–19 के दौरान डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ और दूरस्थ शिक्षा। लर्निंग, मीडिया एंड टेक्नोलॉजी, 45(2), 107–114।

16. विश्व बैंक (2021), कोविड–19 के दौरान दूरस्थ अधिगम : आज के अनुभव और भविष्य के सिद्धांत, विश्व बैंक।.

❑❑❑